अभिनय आर्ट्स

सोसाईटी एक्ट रजि० 936/2002-2003

कर्म निष्काम, लक्ष्य श्रेष्ठतम्

दिनांक.........................

पंत्राक...............

सेवा में,

सचिव

संगीत नाटक अकादमी

कॉपरनिकस मार्ग, नई दिल्ली-**110001**

May 2017

विषयः-safeguarding the intangible cultural heritage and diverse cultural Tradition of India during 2015-16 के first schedule work report.

महाशय,

सूचित करना है। कि संगीत नाटक अकादमी द्वारा मेरी संस्था 'अभिनय आर्ट्स ' पूर्णियाँ बिहार को वर्ष 2015-16 हेतु safeguarding the intangible cultural heritage and Diverse Cultural Trasition of India during 2015-16 के तहत मेरे द्वारा दिये गये विषय "Taru community a culture and a Name विषय पर एक Project दिया गया है। जिसके तहत मैने पश्चिमी चम्पारण बिहार के थारू गॉव का भ्रमण कर थारू समाज के संस्कृति पर दुर्लभ गीत और सांस्कृतिक विरासत पर बातचीत कर कुछ visual संग्रहित करने का प्रयास किया है। जिसके तहत मैने सीड़ी, स्क्रीप्ट और फोटो जमा कर रहा हुँ इसके तहत मुझे दिनांक 01. 09.2015 को Expert कमिटी द्वारा 100000 (एक लाख) रूपया अनुदान राशि स्वीकृत कर इसके एवज में 50,000 (पचास हजार) रूपया अग्रिम राशि के तौर पर मेरी संस्था अभिनय आईस के पटना बैक खाता संख्या 01741000008038 में भेजी गई थी। महाशय उस राशि का लेखा-जोखा जमा कर रहा हुँ।

अतः श्रीमान से निवेदन हे कि मुझे शेष कार्य हेतु शेष राशि 50,000 (पचास हजार)रूपया भुगतान करने कि कृपा कि जाए ताकि में इस project का बाकि कार्य पुरा कर सकुँ ।

धन्यवाद

माणिकांत चौधरी

सचिव

अभिनय,आर्ट्स

बाडीहार

पुणियाँ-854301

मो०-9334869625

अभिनय आर्ट्स स्थापित 2002-2003 बाड़ीहाट, पूर्णियाँ

प्रधान कार्यालय : मुहल्ला - बाड़ीहाट, पोस्ट : खजांची हाट, जिला : पूर्णियाँ - 854301 (बिहार)

स्थानीय कार्यालय : तारकेश्वर नाथ लेन सालिमपुर अहरा,पटना - 800005

Mob : 9334869625 E-mail : abhinayarts936@gmail.com

Minutes of the Meeting of the Expert Committee held on 1.9.2015 to e received under the Scheme for "Safeguarding the Intangible Cultural H And Diverse Cultural Traditions of India" during 2015-16

31.		ABHINAY ARTS PAN : AABTA2146C	C/O-Nageshwar Prasad Chaudhary Po-K.Hat, Vill-Barahat Dist-Purnea- 854301	Tharu community a culture & a name	100000
32.		ACHHINJAL PAN : AAETA3117A	Vill-Bhupatti, Via-Bahubarhi Dist-Madhubani Bihar	Bihar ke Amurt ke Sanskritik viraston ki sandarbh suchi ke nirman hetu data Sangrah-msandarbh Mithila	400000
33.		DIVINE SOCIAL DEVELOPMENT ORGNIZATION PAN: AAAAD2650G	Kamlawati Bhawan, High court Colony Brahmapur, P.O-Phulwari Sharif Patna-801505	Vocational programmed to trained youth to move them to defiance occupations	0
34.		NIRMAL KALA PAN: AAAAN3735G	Bihari saw lane, Bankipur Patna	Bideshiya Lok natya shaili	500000
	CHHATISGARH				
35.		ANUP RANJAN PANDEY PAN : AGQPP1182N	H/15 Sales Tax Colony Khamardih, Shankar Nagar Raipur Chhattisgarh-492007	Bastar Anchal ke Dev-Pad Evan Dev-Pad Vadkon ka suchikaran	400000
36.		SHRI RAMAYAN MEA SAMITI MP BILASPUR CHHATTISGARH PAN : AAJAS5902R	Shri Ramayana Mela Samiti MP Bilaspur Chhattisgarh Shanichari Padav Bilaspur Chattisgarh 495001	Function for safeguarding of cultural Heritage	0
37.		SIDDHANT SEWA SAMI TI PAN : AAIAS1989F	Pratappur naka Near marin drive park Ambikapur Dist surguja	Safeguarding of Gond Community	100000

अभिनय आर्ट्स
स्थापित
2002-2003
बाड़ी हाट, पूर्णियाँ

(Sabeguarding- Report) Abhinay Arts – Bari Hat, Purnea BIHAR-

Sub:→ "Taru Community A Cultural and A, Name" | 9334869625
(2015-2016)

श्री गणेशाय नमः

वीओ-

अपनी संस्कृति को जोगाने वाली 105 साल की एक बूढी की कहानी किसी की जुबानी सुनी थी । मौका मिला तो हमारी टीम चल पड़ी खुद धरोहर बन चुकी धरोहर को सहेजने वाली उस महिला से मिलने.....

एम्बिएंस ब्रेक

वीओ-

कई सड़कों, नदियों और जंगली इलाकों से होकर गुजरने के बाद हम पहुँचे---- गाँव । दिन भर के सफर के बाद आखिर हम अपनी मंजिल तक पहुँच गये । यहां हमने वक्त की डायरी बने एक चेहरे को देखा जिसपर आरी-तिरछी रेखाओं की लिपि में कई बातें लिखी थीं । शाम का धुँधलका कैमरे की आँखों में निराशा भरने लगा था, लेकिन चश्मे के लेंस के पीछे से झाँकती आँखों का उत्साह उस निराशा पर भारी पड़ गया । हमने कैमरा ऑन किया ही था कि कमरे में एक खनकती हुई आवाज गूँज उठी.....

(बूढी औरत का गाना.....)

वीओ-

धरोहर बन चुकी इस महिला से मिलने के दौरान पता चला कि जिस थारू समाज की यह महिला है विरासत के मामले में वो काफी धनी है.....जिसे समझना काफी रोचक और आनन्ददायक है.....

वीओ- अगले दिन जब हम थारुओं के इस गांव में निकले तो पता चला कि कला सिर्फ इनकी संस्कृति का हिस्सा नहीं है.... वरन इनकी जीवनशैली में कला पूरी तरह रचा बसा हुआ है....

एम्बिएंस ब्रेक

वीओ-

साफ सुथरे मिट्टी के घर..... और उनकी दीवालों पर बनी कलात्मक आकृतियाँ.... थारू संस्कृति की खास विशेषता है..... अधिकांश थारुओं के घरों के आगे कबूतर का दड़बा दिखता

अभिनय आर्ट्स स्थापित 2002-2003

है.... मिट्टी का बना ये दड़बा जहाँ थारू महिलाओं के कौशल का नमूना है, वहीं ये भी पता चलता है कि कबूतरों का इनकी संस्कृति से खास नाता रहा है.....जानकार कबूतरों और थारुओं के इस नाते को बौद्ध धर्म की बज्रयान शाखा के प्रभाव के रुप में देखते हैं.....

वीओ-

घर के अंदर हर कदम पर थारू महिलाओं का गृहकौशल और कलाकौशल का नमूना दिखता है..... अधिकांश घरों के अंदर छत में कपड़े और जूट का बना सुन्दर चनवा लगा होता है.... चनवा जहां घर की सुन्दरता को बढ़ा देता है, वहीं छत से सांपों और किसी दूसरे विषैले जीवों को नीचे आने से भी रोकता है.... पुआल से बनी कलात्मक चटाई, मिट्टी और पुआल से बनी अनाज रखने की कोठी..... मुर्गे-मुर्गियों को रखने के लिए बनाया गया छींका.... या दर्जनों दूसरे सामान कला प्रेमी किसी भी शख्स की नजरों को सहज ही खींच लेते हैं..... ये सामान उपयोगिता को कलात्मकता के साँचे में ढालने की थारू परम्परा के बेहतरीन नमूने हैं.....

वीओ-

थारू संस्कृति में न सिर्फ कला को खास महत्व दिया गया है.... बल्कि अतिथि को भी इनकी संस्कृति में खास दर्जा दिया जाता है.... गाँव में घूमने के दौरान कई जगहों पर मेहमानबाजी का निमंत्रण मिला..... एक जगह जब चेंची खाने का निमंत्रण मिला तो हम इनकार नहीं कर पाये.... चेंची थारुओं का खास व्यंजन होता है.... ये आनन्दी धान के चावल से ही बनता है... थरुहट के अलावे ये चावल शायद ही कहीं दूसरी जगह पैदा होता है..... इसे बनाने में वक्त और जलावन दोनों की काफी खपत होती है..... चावल को काफी देर तक भिंगोने के बाद इसे सिक्की की बनी एक टोकरी में रख दिया जाता है..... इस टोकरी को दूसरे बरतन पर चढ़ा दिया जाता है....नीचले बरतन में पानी खौलता रहता है... इससे निकलने वाले भाफ से ही ये चावल पकता है.....पकने के बाद इसे दूध और चीनी के साथ खाया जाता है.... कई लोग इसे मुर्गा, मांस या मछली की ग्रेवी के साथ खाना पसंद करते हैं..... चेंची के स्वाद को सिर्फ खाकर ही महसूस किया जा सकता है...

वीओ

थरुअट का ये इलाका, जहाँ हम पहुँचे हैं, वो पश्चिम चम्पारण के अभयारण्य के पास बसा हुआ है.... बल्कि यूँ कहना ठीक रहेगा कि अभयारण्य में ही बसा है.... थारू एक जनजाति है। जिनकी अर्थव्यवस्था मूल रूप से कृषि और जंगल पर आधारित है.... कृषि कार्य के बाद महली और जंगली जानवरों का शिकार इनका दूसरा मुख्य पेशा है। यहाँ के युवक कृषि कार्य से बचे समय का उपयोग शिकार करने में करते हैं। लेकिन बदलते हालात में जानवरों का शिकार भी बीते जमाने की बात होती जा रही है।

अभिनय आर्ट्स
स्थापित
2002-2003

(थारू युवती के गीत — एही ठैंया झुलनी.....)

वीओ

थारूओं में भी बदलाव आया है.... बदलाव का असर इनके पहनावे में भी दिखता है.... अगर बुजुर्ग महिलाओं को छोड़ दें तो पहनावे के लिहाज से कोई भी थारू पुरुष, महिला या बच्चे आसपास की दूसरी संस्कृति के लोगों से अलग नहीं दिखते हैं.... यहाँ की महिलाओं में आज भी नैसर्गिक सुन्दरता बरकरार है..... लेकिन परम्परागत आभूषण और गोदना के प्रति उनका प्रेम अब बीते जमाने की बात हो गयी है.... परम्परागत लिवास में परम्परागत आभूषणों से सजी युवतियों की नजाकत और मौलिक सुन्दरता शायद ही कहीं दिखे..... हाँ, एक बात में आज भी बदलाव नहीं हुआ है..... आज भी बच्चों की देखभाल और घर के कामों में निर्देशन देने के बाद बुजुर्ग महिलाएँ अपना वक्त सिक्की से तरह-तरह की कलात्मक चीजें बनाने में गुजारती हैं.... सिक्की के बने ये सामान कलाकारी के बेजोड़ नमूने होते हैं..... हालांकि इस काम को उम्र से कोई लेना देना नहीं है....

वीओ

थारुओं के विस्तृत, समृद्ध और बिखरे विरासत को चंद घंटों में समेट पाना काफी मुश्किल है..... लेकिन इसे सहेजना जरूरी भी है । ये किसी खास समाज की विरासत भर नहीं है... बल्कि सम्पूर्ण कला जगत की अमूल्य धरोहर है.....

कजरी

(लोक संस्कृति)

भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत एवं
परम्पराओं के संरक्षण की योजना
(संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली)

कुन्दन कुमार
बेगूसराय, बिहार।
मो.–09199835674
Email- kkp9079@gmail.com

अनुक्रम

बिहार में कजरी	—	1
कजरी का विवरण	—	1
कजरी का परिचय	—	7
कजरी की श्रृंगारिकता	—	12
परंपरा एवं उत्सव	—	15
कजरी के भविष्य को खतरे	—	16
कजरी के संरक्षण के उपाय	—	17
कजरी के संरक्षण के लिए लोगों की सहभागिता	—	18
कजरी गीत/गाने	—	19

बिहार में कजरी

कजरी यों तो पूरे पूर्वी उत्तर प्रदेश का लोकगीत है, किंतु मिर्जापुर, बनारस और जौनपुर में इसकी विशिष्ट शैलियां विकसित हुईं, जो आज भी विद्मान हैं। एक बड़ी पुरानी लोकोक्ति है– लीला राम नगर के भारी, कजरी मिर्जापुर सरनाम। इस लोकोक्ति से कजरी और मिर्जापुर का संबंध स्वतः स्पष्ट है। कजरी की जन्म स्थली मिर्जापुर ही है। कजरी गीतों के जन्मदाता के रूप में मध्य भारत के राजा दानों राय का नाम लिया जाता है। उन्होंने कज्जला देवी (विंध्याचलदेवी) की स्तुति के रूप में कजरी गीतों का आविष्कार किया। एक अन्य मान्यता के अनुसार दानों राय की मृत्यु के बाद उनकी पत्नी सती हो गई थीं, उस समय की महिलाओं ने अपना दुःख व्यक्त करने के लिए एक नये राग में जिस गीत की रचना की वही कजरी है। बिहार के बेगूसराय, मधुबनी, दरभंगा, मुजफ्फरपुर, आरा, रोहतास, बक्सर, सुपौल, सहरसा एवं बिहार के लगभग सभी जिले में कजरी किसी न किसी रूप में गायी जाती है। एशिया महादेश में भारत के उत्तर प्रदेश, बिहार, राजस्थान आदि राज्यों में कजरी गायी जाती है।

कजरी का विवरण

कजरी गायन का आरंभ ज्येष्ठ मास के गंगा दशहरा से होता है। तीन मास तेरह दिन तक कजरी गाने का विधान है। गंगा दशहरा से आरंभ होनेवाली यह गायन परंपरा नागपंचमी से लेकर कजरी तीज तक अपने चरमोत्कर्ष पर रहती है। मिर्जापुर और बनारस की कजरी में शैली का अंतर स्पष्ट प्रतीत होता है। यद्पि कजरी की उत्पत्ति के बारे में विद्वानों में मतभेद है। फिर भी इस बात पर सभी एकमत हैं कि कजरी का प्रचलन मिर्जापुर से ही बढ़ा। कजरी गायन क्षेत्र से जुड़े लोगों का मानना है कि कजरी का मायका मिर्जापुर और ससुराल बनारस में है। भारत की लोक संस्कृति का परंपराओं से गहरा और अटूट रिश्ता है। कजरी सिर्फ गाई नहीं जाती बल्कि खेली भी जाती है। एक तरफ जहाँ मंच पर लोक गायक इसकी अद्भुत प्रस्तुति करते हैं वहीं दूसरी ओर इसकी सर्वाधिक विशिष्ट शैली ढुनमुनिया है

जिसमें महिलायें झुक कर एक दूसरे से जुड़ी हुयी अर्धवृत्त में नृत्य करती हैं।

मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ के कुछ अंचलों में तो रक्षाबन्धन पर्व को कजरी पूर्णिमा के तौर पर भी मनाया जाता है। मानसून की समाप्ति को दर्शाता यह पर्व श्रावण अमावस्या के नवें दिन से आरम्भ होता है,जिसे कजरी नवमी के नाम से जाना जाता है। कजरी नवमी से लेकर कजरी पूर्णिमा तक चलने वाले इस उत्सव में नवमी के दिन महिलायें खेतों से मिट्टी सहित फसल के अंश लाकर घरों में रखती हैं एवं उसके साथ सात दिनों तक माँ भगवती के साथ कजमल देवी की पूजा करती हैं। घर को खूब साफ–सुथरा कर रंगोली बनायी जाती है और पूर्णिमा की शाम को महिलायें समूह बनाकर पूजी जाने वाली फसल को लेकर नजदीक के तालाब या नदी पर जाती हैं और उस फसल के बर्तन से एक दूसरे पर पानी उलीचती हुई कजरी गाती हैं। इस उत्सवधर्मिता के माहौल में कजरी के गीत सातों दिन अनवरत् गाये जाते हैं।

सावन के महीने को छोड़कर अन्य कई सामाजिक एवं त्योहारों के अवसर पर भी लोग इसे गाते हैं। इसका चलन कबसे चला आ रहा है ये बताना कठिन प्रतीत होता है। लेकिन खुशी के मौके पर, शादी, बच्चे के जन्म के अवसर पर, मांगलिक कार्यों आदि के अवसर पर भी लोग इसे गाते हैं।

सावन भादों के कृष्णपक्ष की तीज के दिन जिसे कजली तीज कहा जाता है, गाये जाने वाले गीत को कजली अथवा कजरी कहा गया। कजली तीज के रोज जी भर कजरी गाने गवाने की परंपरा अब भी जीवित है।

कजरी और झूला दोनों एक दूसरे के पूरक से लगते हैं। सावन में स्त्री–पुरूष को कौन कहे मंदिर में भगवान को भी झूले में बिठाकर झुलाया जाता है। भक्तों की भीड़ इस झूलन को देखने के लिए उमड़ पड़ती है और वे झूले में झूलते भगवान के दर्शन कर उन्हें झूम–झूमकर मनभावनी कजरी सुनाते हैं। यों तो कजरी लगभग पूरे देश में विभिन्न रूपों में गायी जाती है,

पर उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर और वाराणसी की कजरी को काफी लोक प्रियता हासिल है।

विन्ध्य क्षेत्र में पारम्परिक कजरी धुनों में झूला झूलती और सावन भादों मास में रात में चौपालों में जाकर स्त्रियाँ उत्सव मनाती हैं। इस कजरी की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह पीढ़ी दर पीढ़ी चलती हैं और इसकी धुनों व पद्धति को नहीं बदला जाता। कजरी गीतों की ही तरह विन्ध्य क्षेत्र में कजरी अखाड़ों की भी अनूठी परम्परा रही है। आषाढ़ पूर्णिया के दिन गुरू पूजन के बाद इन आखाड़ों से कजरी का विधिवत गायन आरम्भ होता है। स्वस्थ परम्परा के तहत इन कजरी अखाड़ों में प्रतिद्वन्दता भी होती है। कजरी लेखक गुरू अपनी कजरी को एक रजिस्टर पर नोट कर देता है, जिसे किसी भी हालत में न तो सार्वजनिक किया जाता है और न ही किसी को लिखित रूप में दिया जाता है।

वस्तुतः लोकगीतों की रानी कजरी सिर्फ गायन भर नहीं है बल्कि यह सावन मौसम की सुन्दरता और उल्लास का उत्सवधर्मी पर्व है। चरक संहिता में तो यौवन की संरक्षा व सुरक्षा हेतु बसन्त के बाद सावन महीने को ही सर्वश्रेष्ठ बताया गया है। सावन में नयी ब्याही बेटियाँ अपने पीहर वापस आती हैं और बगीचों में भाभी और बचपन की सहेलियों संग कजरी गाते हुए झूला झूलती हैं–

घरवा में से निकले ननद भउजइया,
जुलम दोनों जोड़ी साँवरिया।

छेड़छाड़ भरे इस माहौल में जिन महिलाओं के पति बाहर गये होते हैं, वे भी विरह में तड़पकर गुनगुना उठती हैं ताकि कजरी की गूँज उनके प्रीतम तक पहुँचे और शायद वे लौट आयें–

सावन बीत गयो मेरो रामा, नाहीं आयो सजनवा ना।

.....

भादों मास पिया मोर नहरीं आये, रतिया देखी सवनवा ना।

यही नहीं जिसके पति सेना में या बाहर परदेश में नौकरी करते हैं, घर लौटने पर उनके सांवले पड़े चेहरे को देखकर पत्नियाँ कजरी के बोलों में गाती हैं–

गौर–गौर गइले पिया, आयो हुई के करिया।
नौकरिया पिया छोड़ दे ना।

एक मान्यता के अनुसार पति विरह में पत्नियाँ देवी कजमल के चरणों में रोते हुए गाती हैं, वही गान कजरी के रूप में प्रसिद्ध हैं–

सावन हे सखी सगरो सुहावन,
रिमझिम बरसेला मेघ हे
सबके बलमउवा घर अइलन,
हमरो बलम परदेस रे।

नगरीय सभ्यता में पले–बसे लोग भले ही अपनी सुरीली धरोहरों से दूर होते जा रहे हों, परन्तु शास्त्रीय व उपशास्त्रीय बंदिशों से रची कजरी अभी भी उत्तर प्रदेश के कुछ अंचलों की खास लोक संगीत विधा है। कजरी के मूलतः तीन रूप हैं– बनारसी, मिर्जापुरी और गोरखपुरी कजरी। बनारसी कजरी अपने अक्खड़पन और बिन्दास बोलों की वजह से अलग पहचानी जाती है। इसके बोलों में अइले, गइले जैसे शब्दों का बखूबी उपयोग होता है, इसकी सबसे बड़ी पहचान 'न' की टेक होती है–

बीरन भइया अइले अनवइया,
सवनवा में ना जइबे ननदी।

.....

रिमझिम पड़ेला फुहार,
बदरिया आइ गइले ननदी।

विन्ध्य क्षेत्र में गायी जाने वाली मिर्जापुरी कजरी की अपनी अलग पहचान है। अपनी अनूठी सांस्कृतिक परम्पराओं के कारण मशहूर मिर्जापुरी कजरी को ही ज्यादातर मंचीय गायक गाना पसन्द करते हैं। इसमें सखी–सहेलियों, भाभी–ननद के आपसी रिश्तों की मिठास और छेड़–छाड़ के साथ सावन की मस्ती का रंग घुला होता है–

पिया सड़िया लिया दा मिर्जापुरी पिया, रंग रहे कपूरी पिया ना
जबसे साड़ी ना लिअइबा, तबसे जेवना ना बनइबे
तोरे जेवना पे लगिहैं मजूरी पिया, रंग रहे कपूरी पिया ना।

केवल अखाड़े का गायक ही इसे याद करके या पढ़कर गा सकता है–

कइसे खेलन जइबू, सावन में कजरिया,
बदरिया घिर आइल ननदी
संग में सखी न सहेली कइसे जइबू तू अकेली,
गुंडा घेर लीहें तोहरी डगरिया।

बनारसी और मिर्जापुरी कजरी से परे गोरखपुरी कजरी की अपनी अलग ही टेक है और यह 'हरे रामा' और ऐ हारी के कारण अन्य कजरी से अलग पहचानी जाती है–

हरे रामा, कृष्ण बने मनिहारी,
पहिर के सारी, ऐ हारी।

सावन की अनुभूति के बीच भला किसका मन प्रिय मिलन हेतु न तड़पेगा, फिर वह चाहे चन्द्रमा ही क्यों न हो–

चन्दा छिपे चाहे बदरी मा,
जब से लगा सवनवा ना।

विरह के बाद संयोग की अनुभूति से तड़प और बेकरारी भी बढ़ती जाती है। फिर यही तो समय होता है इतराने का, फरमाइशें पूरी करवाने का–

पिया मेंहदी लिआय दा मोतीझील से,
जायके साइकील से ना
पिया मेंहदी लिअहिया,
छोटकी ननदी से पिसइहा
अपने हाथ से लगाय दा कांटा–कील से,
जायके साइकील से.....
धोतिया लइदे बलम कलकतिया,
जिसमें हरी–हरी पतियां।

ऐसा नहीं है कि कजरी सिर्फ बनारस, मिर्जापुर और गोरखपुर के अंचलों तक ही सीमित है बल्कि इलाहाबाद और अवध अंचल भी इसकी सुमधुरता से अछूते नहीं हैं।

कजरी लोक संस्कृति की जड़ है और यदि हमें लोक जीवन की ऊर्जा और रंगत बनाये रखना है तो इन तत्वों को सहेज कर रखना होगा। कजरी भले ही पावस गीत के रूप में गायी जाती हो पर लोक रंजन के साथ ही इसने लोक जीवन के विभिन्न पक्षों में सामाजिक चेतना की अलख जगाने का भी कार्य किया है। कजरी सिर्फ राग विराग या श्रृंगार और विरह के लोक गीतों तक ही सीमित नहीं है, बल्कि इसमें चर्चित समसामयिक विषयों की भी गूंज सुनायी देती है। स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान कजरी ने लोक चेतना को बखूबी अभिव्यक्त किया। आजादी की लड़ाई के दौर में एक कजरी के बोलों की रंगत देखें–

केतने गोली खाइके मरिगै,
केतने दामन फांसी चढ़िगै
केतने पीसत होइहें जेल मां चकरिया,
बदरिया घेरि आई ननदी।

1857 की क्रान्ति के पश्चात् जिन जीवित लोगों से अंग्रेजी हुकूमत को ज्यादा खतरा महसूस हुआ, उन्हें कालापानी की सजा दे दी गई। अपने पति को कालापानी भेजे जाने पर एक महिला कजरी के बोलों में गाती हैं–

अरे रामा नागर नैया जाला काले पनियां रे हरी,
सबकर नैया जाला कासी हो बिसेसर रामा
नागर नैया जाला काले पनियां रे हरी,
घरवा में रोवै नागर, माई और बहिनियां रामा
सेजिया पै रोवे बारी धनिया रे हरी।

स्वतंत्रता की लड़ाई में हर कोई चाहता था कि उसके घर के लोग भी इस संग्राम में अपनी आहुति दें। ऐसे में उन नौजवानों को जो घर में बैठे थे, महिलाओं ने कजरी के माध्यम से व्यंग कसते हुए प्रेरित किया–

लागे सरम लाज घर में बैठ जाहु,
मरद से बनिके लुगइया आए हरि
पहिरि के साड़ी, चूड़ी, मुंहवा छिपाई लेहु,
राखि लेइ तोहरी पगरइया आए हरि।

कजरी का परिचय

भारतीय परम्परा का प्रमुख आधार तत्व उसकी लोक संस्कृति है। शहरी क्षेत्रों में भले ही संस्कृति के नाम पर फिल्मी गानों की धुन बजती हो, पर ग्रामीण अंचलों में अभी भी प्रकृति की अनुपम छटा के बीच लोक रंगत की धारायें समवेत फूट पड़ती हैं। विदेशों में बसे भारतीयों को अभी भी कजरी के बोल सुहाने लगते हैं, तभी तो कजरी अमेरिका, ब्रिटेन इत्यादि देशों में भी अपनी अनुगूँज छोड़ चुकी है। गाँव की सोंधी सोंधी माटी और लोक जीवन से जिनका जरा भी संबंध है, वे कजरी के इन रसमय आंचलिक गीतों को सुनते ही भाव विह्वल होकर झूम उठते हैं। कजरी में संयोग श्रृंगार की प्रधानता पायी जाती है। विरहणी की विरह वेदना भी इन गीतों में मार्मिकता के साथ अभिव्यक्त की गई है। कुछ लोग कजरी की

उत्पत्ति का स्रोत कजरारे बादलों को मानते हैं। भारतेंदु हरिश्चंद्र ने कजरी के मूल में तीन कारण गिनाये हैं। सावन के मतवाले मौसम में कजरी के बोलों की गूंज वैसे भी दूर–दूर तक सुनाई देती है।

वर्षा ऋतु का शुभारंभ सिर्फ ग्रीष्म की तपती धारा को ही नहीं सारे जीव जंतुओं को शीतलता देता है। मोर पंख खोलकर नाचने लगता है भला तरूणियों के हृदय में हिलोरें क्यों नहीं उठें। वे नृत्यों एवं गीतों में बिभोर हो जाती हैं। वर्षा की प्रथम बूंद के साथ ही गीतों की स्वर लहरियां वातावरण में रंग बिखेर देती हैं। इस पावस गीतों को ही कजरी नाम से जाना जाता है। इन गीतों का जन्म मिर्जापुर में हुआ। कजरी गीतों में आमलोगों की भावनाएं भी शामिल हैं। मानसून के आने से गर्मी से तो निजात मिलती ही है यह एक नये जीवन की शुरूआत का प्रतीक है।

कजरी या कजली गीतों के जन्म को लेकर अनेक मान्यतायें चली आ रही हैं। कजरी पर कई दंत कथाएं भी हैं। ये दंत कथाएं इस प्रकार हैं–

1) कहा जाता है कि एक छोटे राजा की पुत्री कजली ने अपने पति के वियोग में जिन विरह गीतों की रचना की उसे ही कजरी के नाम से जाना गया है।
2) मिर्जापुर में विंध्याचल के दक्षिण पश्चिम दिशा में एक अष्टभुजा देवी का मंदिर है। अष्टभुजा देवी को यशोदा के गर्भ से उत्पन्न पुत्री बताया जाता है जिसे कंस ने देवकी वासुदेव की आठवीं संतान समझ पत्थर पर पटकने का असफल प्रयास किया था। वह बालिका आकाश मार्ग से उड़कर अष्टभुजा पहाड़ पर जा कर शक्ति के रूप में स्थापित हुई। वह यौवनावस्था को प्राप्त कर काम से पीड़ित हो इधर उधर भटकने लगती थी तथा जो भी मिलता उसे शाप दे देती थी। एक गायक ने उस देवी को एक गीत गा कर सुनाया जो देवी को बहुत पसंद आया। इस तरह के गीत अन्य लोगों ने भी गाये जिनसे कज्जला देवी प्रसन्न होती थी। इसे कजरी कहा गया।
3) मध्य भारत में सबसे लोकप्रिय राजा दादूराय की मृत्यु तथा रानी नागमती के सती हो जाने पर राज्य की शोकसंतप्त जनता ने अपनी वेदना की व्यंजना के लिए कजरी नामक नए राग को जन्म दिया, जिसे आगे चलकर काफी लोकप्रियता हासिल हुई। दादूराय के राज्य

में कजली नामक वन की खूबसूरती के कारण इन गीतों को कजली और आगे चल कर कजरी नाम दिया गया।

4) उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर शहर में कजरी नामक एक महिला रहती थी। उसका पति रूपये कमाने के लिए हजारों मील दूर परदेस गया था। न जाने कितने ही मौसम बीत गये लेकिन उसने घर की सुधि नहीं ली। एक साल बरसात के मौसम में पत्नी अपने पति की याद में गाने लगी। गीतों का यही रूप कजरी के नाम से मशहूर हुआ।

कजरी संगीत की ऐसी विधा है जो दुख को भी सुख में बदल देती है। बरसात के दिनों में मिर्जापुर और आसपास के क्षेत्रों कई जगह मेले लगाये जाते हैं जगह जगह अखाड़े भी लागाये जाते हैं इन मेलों में गाये जाने वाले कजरी गीतों से युवतियों का उल्लास गूँजता है। कालांतर में यह गीत मध्य प्रदेश एवं बिहार में भी काफी प्रचलित हुए। ये कभी वर्षा के फुहार के साथ मकान, बाग–बगीचे, राहों–चारागाहों और हरे–भरे खेतों तक गूँजते हैं तो कभी झूलों पर तो कभी मचानों पर तो कभी हरी–भरी धरती के पटल पर।

ग्रामीण क्षेत्रों में किसान खेती के लिए वर्षा ऋतु पर निर्भर हैं। बरसात आने के बाद खेतों की जुताई और फसलों की बुआई का काम शुरू होता है। जिससे यह उत्सव का समय होता है। लेकिन जिन महिलाओं के पति उत्सव के इस माहौल में साथ नहीं होते वे अपना अकेलापन दूर करने के लिए कजरी का सहारा लेती हैं। कजरी की तान पर झूमती हैं गाँव की रमणियां और जवान हृदय और इनकी खुशी में बच्चों और बूढ़ों के दिल भी शामिल होते हैं।

झूले पर जब किशोरियाँ गाती हैं तब उनके अन्दर का उल्लास गीतों में ढलकर छलक पड़ता है।

मिथिलांचल की कजरी इस प्रकार हैं–

खल खल इंजोरिया सखी है निरमल हे रतिया
हे निरमल है रतिया जमुना तीरे.....
झूला झूलै छैरे सांवरिया यमुना तीरे.....

फिर भोजपुर या उत्तर प्रदेश या तरूणियों के मनोभाव कजरी में इस तरह अभिव्यक्त होते हैं–

घिरी कारियारिया पुरबवा में नदिया के पार सखीया
आबे उड़ते उड़त बनबकुलाक दुधिया कतार सखिया
झेलुझा झकोरेला रहि रहि डोलेला जियरा हमार सखिया
जइसे रहि रहि रसे रसे नदिया में डोले सवार सखिया।

जब आकाश बादलों से आच्छादित हो जाता है तो नायिका को विरह वेदना और सताती है वह दादुर, मोर, कोयल आदि का गान सुनकर उन्मत्त सी हो जाती है और उसकी विरह वेदना कजरी के बोलों में फूट पड़ती है।

बदरा उमड़ि घुमरी घन गरजय
बुंदिया बरसन लागी न
बदरा.....
दादुर मोर पपीहा गावय
जिया उमतावय ना हो जिया उमतावय ना
बदरा.....

अब रिमझिम फुहार बरसने लगी। सावन की छटा और निराली हुई। मगर इन फुहारों के साथ भी नायक नहीं आया। मिलन की बाट जोहते विकल नैन प्यासे ही रहे। जुदाई का यह दर्द कजरी में उभरा–

नाहीं आइले बिरना तोहार हो
सवनमा आई गइले ननदी
रसे रसे छलकेला रस के गगरिया
सवनमा आइ गइले ननदी

विरह ही नहीं मिलन में कभी कभी नोंक झोंक में भी कजरी तान ने अपना स्थान बनाया है।

फागुन मास धानि हहरो फगुअवा
तु हमे छोड़ि गइलू हो नइहरवा
सावन मास धानि तोहरि कजरिया
ता तोहि छोड़ि जाइवे हो विदेसवा

कजरी गान तरूणियां अपने घरों से निकल कर पास की गली तथा बाग बगीचे में जाती है और इस तरह अपनी सुध–बुध खो देती हैं कि कभी झुमका कभी नकबेसर खो जाता है। घर आते ही परिवार वालों की प्रताड़ना सहनी पड़ती है।

बागों में फूलों की शोभा न्यारी है लेकिन जब अपना दिल ही उदास हो पिया नहीं पास हो तो उन फूलों के सौन्दर्य से भी ईर्ष्या का होना स्वभाविक है।

बेला फुलेला अधराति भिनुसुरवा हे हरी
फुलवा लोढन गइलुं, तोहिरे फुलबगिया में रामा
अरे रामा आई गइली पिया के सुरतिया हे हरी
चुनि–चुनि कलियां मैं गजरा बनबलेऊं रामा
अरे रामा ककरे गरवा डारौं पिया घर नाहीं हे हरी

सिर्फ नायिका का हृदय ही नही नायक का हृदय भी सावन में मचल उठता है उसे नायिका के बिना सूना–सूना अपना घर काटने को दौड़ता है। वह योगी होने की कल्पना तक कर लेता है।

मयना तोहे बिना भवे न भवनमा
अवरे सवनमा ना.....
घिरी घटा घनघोर, दादुर, मोर मचावे शोर
अवरे सवनमा ना.....
मयना जोगी होवे तोहरे करनमा
अवरे सवनमा ना।

जब घनघोर वर्षा होती है बिजली छिटकती है तथा मेघ गरजते हैं, अगर पुत्र घर से बाहर हो तो माँ का हृदय भय से आशंकित हो जाता है। माँ की यह असीम ममता भी कजरी में भी मुखरित हैं–

सावन भदौवा क रतिया उमड़िय दैवा गरजै हो।
दैवा जानि बरसेऊ वही वन में
जहाँ मोर अलग लड़िकन हो।

कजरी की श्रृंगारिकता

प्रतीक्षा, मिलन और विरह की अविरल सहेली, निर्मल और लज्जा से सजी–धजी नवयौवना की आसमान छूती खुशी, आदिकाल से कवियों की रचनाओं का श्रृंगार कर उन्हें जीवंत करने वाली कजरी सावन की हरियाली बहारों के साथ तेरा स्वागत है। मौसम और यौवन की महिमा का बखान करने के लिए परंपरागत लोकगीतों का भारतीय संस्कृति में कितना महत्व है–कजरी इसका उदाहरण है। प्रतीक्षा के पट खोलती लोकगीतों की श्रृंखलाएं इन खास दिनों में गज़ब सी हलचल पैदा करती हैं, हिलोर सी उठती है, श्रृंगार के लिए मन मचलता है और उस कजरी के सुमधुर बोल! सचमुच वह सबकी प्रतीक्षा है, जीवन की उमंग और आसमान को छूते हुए छूते हुए झूलों की रफ्तार है। शहनाईयों की कर्णप्रिय गूंज है, सुर्ख लाल मखमली वीर बहूटी और हरियाली का गहना है, सावन से पहले ही तेरे आने का एहसास! महान कवियों और रचनाकारों ने तो कजरी के सम्मोहन की व्याख्या विशिष्ट शैली में की है।

सावन का सुहाना माह। मैदानों में बिछी गुदगुदाने वाली हरी मखमली घास। खेतों और बगीचों में भी बस हरीतिमा ही हरीतिमा। आसमान में उमड़ते–घुमड़ते कजरारे बादलों की अनुपम छटा। मयूरों का नर्तन। बालू में नहाती हुई चिड़ियों का कलरव। सावन के झूले में झूलती हुई ललनाएँ और पेंग बढ़ाते हुए ग्रामीण सुकुमार। तभी रिमझिम बारिश की झड़ी लग जाती है और अधरों पर रसीली कजरी के मधुर स्वर फूट पड़ते हैं।

झूला लागल कदम की डारी,
झूलें कृष्ण मुरारी ना
राधा झूलें कान्ह झुलावें,
कान्हा झूलें राधा झुलावें
पारी पारी ना

मिथिला में सावनी माह में हिंडोले पर बैठकर नर–नारी मल्हार के गीत गाते हैं। राजस्थान में तीज के अवसर पर गाये जाने वाले हिंडोले के गीत भी कजरी की कोटि में आते हैं।

अगर मन के मीत साथ–साथ हों तो कजरी गाने का आनंद ही कुछ और है। राधा कृष्ण की रास लीला को माध्यम बनाकर नायिका अपनी सहेलियों के साथ ढोलक पर थाप दे–देकर अपने चितचोर को सुनाते हुए गा उठती हैं:–

कान्हा हंसि हंसि बोली बोलड़ ऊ तो करइ ठिठोली ना
राहे बाटे बहियों मरोड़ी ऊ तो करइ मचोली ना
असगर आके मिलत कुंजन में ऊ तो रोकड़ टोली ना
ग्वाल बाल संग खाये लुटाये ऊ तो दही मटकोली ना

सिर्फ इतना ही नहीं, रसिया कृष्ण ने नारी का भेष बनाकर चुड़ियों का टोकरा सिर पर रखा और चल पड़े राधा तथा गोपियों को चूड़ी पहनाने–

हरि–हरि कृष्ण बनेले मनिहारिन,
पहिनि के साड़ी रे हरी

प्रिया की हंसी ठिठोली सुनकर प्रिय भला कैसे चुप बैठ सकता है! बेला–चमेली की तरह ही उसके दिल में प्यार के अनगिनत फूल खिल उठते हैं और उनकी खुशबू से पूरा माहौल महमहा उठता है।

अरे राम बेला फूले आधी रात,
चमेला बाड़े भोर रे हरि।

प्रियतमा की झुलनी और उसके सोलहों श्रृंगार को निरखकर प्रियतम की आँखें चौंधिया जाती हैं। वह कटाक्ष करने से बाज नहीं आता–

अरे रामा करत कवल दिलजनिया,
झूला के झुलनिया रे हरी

इस प्रकार सज धजकर गोरी आखिर कहाँ चल दी? कहीं वह अपने रूप लावण्य का प्रदर्शन करने की खातिर बाजार तो नहीं जा रहीं है?

गोरी करके खूब सोलह सिंगार चली,
घूमने बाज़ार चली ना

राधा कृष्ण और ग्वाल–बालों के अनुपम प्यार की अलौकिक छटा। गोपियों के चित्त को चुराने वाले श्रीकृष्ण ने बाँसुरी की तान छेड़ दी और वंशी की आवाज के चुंबकत्व से अपने आप खिंचती चली आयी राधिका झूम–झूमकर गा उठी है। फिर तो ग्वाल–बालों का जी जुड़ा जाता है और पूरे मधुबन में जैसे मधुरस की बारिश हो उठती है। मिर्जापुरी कजरी का कमाल देखिये–

सखी मधुबन में वंशी के तान बा
राधाजी के जान बा ना,
कृष्ण बाँसुरी बजावे,
राधा झूम झूम गाये,
ग्वाल बाल के जियरा अघान बा,
राधाजी के तान बा ना
परदेश गये मोरे साँवरिया

कजरी में सिर्फ़ संयोग श्रृंगार की ही नहीं, बल्कि वियोग की भी मार्मिक अभिव्यक्ति मिलती है। झमाझम पानी बरस रहा है। सहेलियाँ उल्लासित अह्लादित होकर झूला झूलने में मशगूल हैं। इधर ठंडी हवाएँ छेड़छाड़ करने पर उतारू हो चली हैं। काले कलूटे बादलों की गुर्राहट और बिजली की चका चौंध न जाने क्यों दिल में दहशत पैदा कर रही है। पिया मिलन की आस मटियामेट हो गई। आखिर परदेसी प्रियतम नहीं आए। आँखों से आँसू टपक रहे हैं– टप–टप

करूँ कौन जतन अरी ऐ री सखी,
मोरे नयनों से बरसे बादरिया,
उठी काली घटा, बादल गरजें,
चली ठंडी पवन मोरा जिया लरजे
थी पिया मिलन की आस सखी
परदेश गए मोरे सांवरिया

प्रतीक्षा की भी एक सीमा होती है न! भला कब तक बाट जोहती रहे राधा रानी? सोने के थाल में परोसे गये व्यंजन, गंगाजल, आस हुलास सब कुछ भीग गया कुछ तो बारिश की बूँदों से और कुछ नयनों से टपकते मोतियों से।

भारतीय परंपरा का प्रमुख आधार तत्व उसकी लोक संस्कृति है। यहां लोक कोई एकाकी धारणा नहीं है, बल्कि इसमें सामान्य–जन से लेकर पशु–पक्षी, पेड़–पौधे, ऋतुएं, पर्यावरण, हमारा परिवेश और हर्ष–विषाद की सामूहिक भावना से लेकर श्रृंगारिक दशाएं तक शामिल हैं। ग्राम–गीत की भारत में प्राचीन परंपरा रही है। लोकमानस के कंठ में श्रुतियों में और कई बार लिखित–रूप में यह पीढ़ी–दर–पीढ़ी प्रवाहित होते रहते हैं। पंडित रामनरेश त्रिपाठी के शब्दों में ग्राम गीत प्रकृति के उद्‌गार हैं, इनमें अलंकार नहीं, केवल रस है। छंद नहीं, केवल लय है। लालित्य नहीं केवल माधुर्य है। ग्रामीण मनुष्यों के स्त्री–पुरूषों के मध्य में हृदय नामक आसन पर बैठकर प्रकृति मानो गान करती है। प्रकृति का यह गान ही ग्राम गीत है..... .....। इस लोक संस्कृति का ही एक पहलू है–कजरी।

ग्रामीण अंचलों में अभी भी प्रकृति की अनुपम छटा के बीच कजरी की धाराएं समवेत फूट पड़ती हैं। यहां तक कि जो अपनी मिट्‌टी छोड़कर विदेशों में बस गए, उन्हें भी कजरी अपनी ओर खींचती है। तभी तो कजरी अमेरिका, ब्रिटेन इत्यादि देशों में भी अपनी अनुगूंज छोड़ चुकी है। सावन के मतवाले मौसम में कजरी के बोलों की गूंज वैसे भी दूर तक सुनाई देती है।

कजरी का आरंभ देवी वंदना से होता है। रतजगा में गायन के साथ हास–परिहास, नकल, जोगीरा तथा प्रातः स्नान से पूर्व पतियों का नाम लेकर गाने की परंपरा है। रचना विधान की दृष्टि से कजरी का नाम चौलर या चौलीर है। चौलीर में पांच फूल और चार बंदिशें होती हैं, पांचवें फूल पर कजरी समाप्त हो जाती है। यह कजरी बिना वाद्‌य यंत्रों के भी गायी जा सकती है। कजरी का दूसरा भेद है शायरी। यह भेद अपेक्षाकृत नया है। इसमें बंदिशों की संख्या निश्चित नहीं होती। इसे प्रायः पुरूष गाते हैं। गायक की आवाज तेज हो और साथ में ढोल–नगाड़े की थाप हो तभी इस कजरी की रंगत जमती है।

परंपरा एवं उत्सव

हिन्दू कैलेंडर के हिसाब से पांचवें माह भादों में कृष्ण पक्ष की तीज को कजली, कजरी तीज मनायी जाती है। यह पर्व रक्षाबंधन के तीसरे दिन और जन्माष्टमी के पांच दिन पहले मनाया जाता है। इस तीज का भी अलग महत्व है। पति पत्नी के रिश्ते को मजबूत बनाने के लिए तीज का व्रत रखा जाता है। यह भी हर सुहागन के लिए महत्वपूर्ण है। इस दिन भी पत्नी अपने पति की लम्बी उम्र के लिए व्रत रखती है व कुंवारी लड़की अच्छा वर पाने के लिए यह व्रत रखती है।

महिलाएं कजरी तीज धूमधाम से मनाती हैं। उत्साह और उमंग से भरी महिलाएं पूरे दिन निर्जला व्रत रखती हैं और पति की दीर्घायु की कामना करती हैं। सुबह से ही उत्साह में डूबी महिलाएं सूर्योदय के साथ भक्ति के रंग में डूब जाती हैं। मन ईश्वर की आराधना में लीन हो जाता है। शाम होते ही चंद्रमा के उगने की प्रतीक्षा शुरू हो जाती है। घरों में नीम की डाली लाकर उसे एक वृक्ष का रूप दिया जाता है। उसके समक्ष चने का सत्तू, खीरा, नींबू रखा जाता है और दीपक जलाया जाता है। तीज माता की कथा सुनाई जाती है। कजरी तीज के लोक गीतों से वातावरण गूंज उठता है।

चंद्रमा के उदय होने पर अर्घ्य दिया जाता है। सभी के कल्याण की कामना की जाती है। बुजुर्गों के चरण स्पर्श करके उनका आशीर्वाद लिया जाता है। उसके बाद उपवासी महिलाएं सत्तू का सेवन करती हैं। अविवाहित युवतियां भी अपने उत्तम पति की कामना से इस व्रत, पूजन को करती हैं।

कजरी के भविष्य को खतरे

कजरी मूलतः भोजपुरी में गाया जाता है। भोजपुरी भाषा को संस्कृति मान विषयों में शामिल कर लिया गया है। उपभोक्तावादी बाजार के ग्लैमरस दौर में कजरी भले ही कुछ क्षेत्रों तक सिमट गई हो पर यह प्रकृति से तादात्म्य का गीत है और इसमें कहीं न कहीं पर्यावरण चेतना भी मौजूद है। इसमें कोई शक नहीं की सावन प्रतीक है सुख का, सुन्दरता का, प्रेम का, उल्लास का और इन सब के बीच कजरी जीवन के अनुपम क्षणों को

अपने में समेटे यूँ ही रिश्तों को खनकाती रहेगी और झूले की पींगों के बीच छेड़–छाड़ व मनुहार यूँ ही लुटाती रहेगी। कजरी हमारी जन चेतना की परिचायक है और जब तक धरती पर हरियाली रहेगी कजरी जीवित रहेगी। अपनी वाच्य परम्परा से जन–जन तक पहुँचने वाले कजरी जैसे लोकगीतों के माध्यम से लोक जीवन में तेजी से मिटते मूल्यों को भी बचाया जा सकता है।

कजरी तो न जाने हमारी भोजपुरी में कहाँ भटक गयी है लेकिन भोजपुरी फिल्मों में अधनंगी लड़कियों को पंचअर्थी संवाद वाले गानों में यौन आकर्षण का नाटक करते देखा जा सकता है। ये अश्लीलता हमारी लोक संस्कृति की हत्या करती दिखती है। पहले शादियों में जो गाने सुनने को मिलते थे अब उनकी जगह ये सड़े भोजपुरी गीतों ने ले रखा है। कहने को तो ऐसे गायक कहते हैं कि हम भोजपुरी को बचाने का कार्य कर रहे हैं लेकिन ये भोजपुरी को बदनाम करते जा रहे हैं। आप किसी भी बारात में भोजपुरी के लगाय दीह चोलिया के हूक राजा जी..... बुझाता की ना बताव ए राजा गन्ना के रस ढ़ोरी में सही सही जाता की न आदि पंचअर्थी गाने पर नाचते युवक–युवतियों को देख सकते हैं। इन गानों ने कजरी के व्यवहार को भी बदल दिया है। ये अश्लीलता हमारी लोक संस्कृति के लिए खतरा है। एक और बड़ी बात है गानों की अश्लीलता को रोकने के लिए कोई ठोस कानून नहीं है। इन सब कारणों से हमारी लोक संस्कृति मिटती हुई प्रतीत होती है।

बनारस और मिर्जापुर में कजरी को पर्याप्त संरक्षण मिला, जिससे यह खूब विकसित हुई। बनारस के संगीतकारों ने इस क्षेत्र के प्रचलित लोकगीतों की तरह कजरी को भी शास्त्रीय सुरों में ढालकर उपशास्त्रीय गायन की एक नई विधा विकसित की जो काफी लोकप्रिय हुई। धीरे–धीरे इस लोकगीत की लोकप्रियता ग्राम्यांचलों में भी कम हो रही है। लोकसंगीत एवं लोक संस्कृति के प्रमुख अंग के रूप में कजरी भी लुप्त होने के कगार पर है। इस लोक संस्कृति की रक्षा इससे जुड़ कर ही की जा सकती है।

कजरी के संरक्षण के उपाय

कजरी लोक संस्कृति के संरक्षण के लिए मेरे हिसाब से कुछ कार्य किये जा सकते हैं। ये कार्य निम्न हो सकते हैं–

1) कजरी/लोक कला पर कार्यशाला का आयोजन– इस तरह के कार्यशाला से कलाकारों को कजरी/लोक कला को जानने और समझने का अवसर मिलेगा। कलाकार ये समझ पायेंगे कि कजरी क्या है। कार्यषाला से उनके अन्दर लोककला के प्रति जिज्ञासा और आकर्षण बढ़ेगा और कजरी जैसी विलुप्त होती लोक कला को पुनः हम अपने समाज में देख सकते हैं।

2) प्रचार–प्रसार– कजरी का प्रचार–प्रसार किया जाय। प्रत्येक गाँव में कजरी को पहुँचाने का जिम्मा कजरी के लोक कलाकारों को दिया जा सकता है जो उस क्षेत्र से संबंध रखते हों।

3) महोत्सव– कजरी महोत्सव जैसे कार्यक्रम करने की आवश्यकता प्रतीत होती है। लेकिन ये कार्यक्रम गाँवों में हो तो कजरी को बढ़ावा मिलेगा।

4) प्रतियोगिता– कजरी पर प्रतियोगिता आयोजित की जा सकती है। प्रतियोगिता के लिए लोग पुनः कजरी को ओर जाएंगे और कजरी के बोल सुनाई देंगे।

5) फिल्में– कजरी पे बनी डाक्यूमेंट्री फिल्में भी लोगों को कजरी के प्रति जागरूक करेंगी।

कजरी के संरक्षण के लिए लोगों की सहभागिता

चूंकि कजरी गाँवों की विरासत रही है। ये बात लोगों को समझाने की जरूरत है। नयी पीढ़ी कजरी से अछूती है। नयी पीढ़ी अगर ये जान ले कि कजरी हमारी धरोहर है तो वो इसे बचा सकती है। युवा पीढ़ी तक कजरी उपरोक्त माध्यम से पहुँचाई जा सकती है। इसके संरक्षण में लोग जरूर

आगे आएंगे। गैर सरकारी संगठनों को भी इसके संरक्षण के लिए लगाया जा सकता है। ये संगठन कजरी के संरक्षण के लिए कार्य करेंगे और कार्यक्रम आयोजित करेंगे। जिसके प्रभाव से वैसे लोकगायक भी सामने आयेंगे जो कजरी गाना छोड़ किसी और गाने को लेकर चल पड़े हैं। फिल्में संचार का ससक्त माध्यम होती हैं। कजरी पर बनी डाक्यूमेंट्री फिल्म लोगों को कजरी के प्रति प्रेरित करने का कार्य करेगी।

कजरी गीत/गाने

(1)

विदवा कै दे मोरे राजा
कजरिया खेले जाकै रे नैहरवा।
जो तू बारी धना जाएउ नैहरवा
प टीका धरि जाएउ रे, सेजरिया।
टिकवा के पतिया चमके सारी रतिया
प जनु धना बाटी रे सेजरिया।

(2)

घेरि घेरि आवै पिया कारी बदरिया
दैवा बरसे हो बड़े बड़े बूंद
बदरिया बैरिन हो।
सब लोग भींजै घर अपने
मोरा पिया हो भींजै परदेस
बदरिया बैरिन हो।
दुलहिन रानी हो चीठी लिखि भेजैं
घर आओ ननदजी के भाय
बदरिया बैरिन हो।

(3)

कइसे खेले जाइब सावन में कजरिया

बदरिया घेरि आइले ननदी।
तू त चललू अकेली तोरा संग न सहेली
गुंडा घेरि लीहें तोही के डगरिया
कतना जना खइहैं गोली
कतना जइहैं फंसी डोरी
कतना जना पीसिहें जेलखाना में

.....

(4)

आये रे सावनवा नहीं आए मन भावनवा रामा
हरि–हरि जोहते दुखाली दोनों अंखियां रे हरी
केहू ना मिलावे उलटे मोहे समुझावे रामा
हरि–हरि दुख नाही बूझे प्यारी सखियां रे हरी
केही विधि जाई उड़ी पियवा के पाइ रामा
हरी हरी उड़लो न जाय बिना पंखिया रे हरी।

(5)

नहीं आये घनश्याम घेरी आयी बदरी
बैठी तीरे बज़बाम तू न मोरी लाज थाम
सुन बिनती मोरे श्याम घेरी आयी बदरी
आयी सावन की बहार गूँजे मोरवा पुकार
पड़े बूंदन फुहार घेरी आयी बदरी
कान्हा हमें बिसरा रहे सौतन लगाय
करी कवन उपाय घेरी आयी बदरी।

लक्षमण मिर्जापुरी

(6)

बाबा भेजेले नियरवा बेटी केवरिया धइले ठाढ़
ससुर बांचेले नियरवा सैंया गैले खिसियाय
जाये देहू ए पियवा जाये देहू ना
सखिया जोहत होइहें बटिया

हो कजरिया के बहार।
बेटी कजरी खेलन अइह हो
सावन रे मास।
सावन खेलिह कजरिया ना
भदुआ खेलिह तीज
बेटी फागुन खेलहि फगुआ
हो झुलनियां के बीच।

(7)

कजरी खेलैं सरजु तिरवा
पिया संग जनक दुलारी ना।
झूला पड़त स्वर्ण का अद्‌भुत
कदम की डारी ना।
झीनी झीनी बूंदे पड़ती
घटा है कारी ना।
'दीन' मुदित अति निरखि
युगल छवि प्यारी प्यारी ना।

रामशरण दीन

(8)

बितैय पहाड़ी मेला सावन के जब कजरी आई रामा
हरी हरी मिर्जापुर में तब छायी छवी न्यारी रे हरी।
घर घर झुला झूलै करै कलोलै गलियां गलियां रामा
हरि–हरि ढुनमुनियां खेलै जुवती औ बारी रे हरी।
मेहदी ललित लगाय करन में साजै सूही सारी रामा
हरि–हरि कुलवारी तिय गावैं चढ़ी अटारी रे हरी।
बारी नारी नाचै औ गावैं सरस भाव बतलावै रामा
हरि–हरि रस बरसावै मनहूं सुमुखि सुकुमारी रे हरी।
पुरित सहर सरंगी के सुर सहित ताल तवलन के रामा
हरि–हरि टनकारी जोड़ी घुंघरू झनकारी रे हरी।
बरसै रस जहं प्रेम प्रेमघन सुख सरिता भरि उमरै रामा

हरि–हरि रहै नगर में नित्य नयी गुलजारी रे हरी।

बद्रीनारायण उपाध्याय (प्रेमधन)

(9)

मिर्जापुर कैलऽ गुलजार होऽ
कचौरी गली सून कैलऽ बलमू
एही मिरजापुरवा से उड़लै जहजिया
पिया चली भैले रंगून
हो कचौड़ी गली.....।
पनमा ले पातर पिया तोरी धनियां
देहिया गलेला जैसे नून
हो कचौड़ी गली.....।
हियवा के मरमा वैदवो न जाने रामा
लागल करेजवा में घून
हो कचौड़ी गली सून कैले बलमू।

(10)

आई सावन की बहार मोरे बारे बलमू।
छाई घटा घनघोर, बन में बोलन लागे मोर
रिमझिम पनिया बरसे जोर मोरे बारे बलमू
धानी चद्दर सियाव सारी सबुज रंगाव
बा में गोटा टंकवाव मोरे बारे बलमू
मैं जो जइहों कुजधाम सुनै कजरी ललाम
जहाँ झूले राधेश्याम मोरे बारे बलमू
बलदेव क्यों उदास पुनि अइहों तोरे पास
मानो मोरा बिसवास मोरे बारे बलमू

द्विज बलदेव

(11)

रिमझिम बरसन लागी बुनिया, चलु सखी खेलैं कजरी
वृन्दावन की कुंज गलिन मां मिली जुली के सिगरी

जहां श्याम संग चउरी खिलावै झुलावै एक घरी
सोरह अंग सिंगार बनावहु नौरंगी चुनरी
माथे खौर नासिका बेसर गलेमाल दुलरी
श्रीधर चलहु श्याम को रिझावैं, अधिक उछाह भरी

श्रीधर पाठक

(12)

मोही नन्द के कन्हाई बिलमाई रे हरी
बहे पुरवाई और बदरिया झुक आयी रामा
कुंज में बुलाई बृजराई रे हरी
बंसिया बजाई सुनि सखि उठि आई रामा
सब जुरि आई रस बरसाई रे हरी
माधवी भी जाई जिय अति हुलसाई रामा
कजरी सुनाई मनभाई रे हरी
मिल उर लाई प्यारी पिय को भुलाई रामा
नाहिं हरिचन्द्र पछताई रे हरी

भारतेंदु हरिष्चन्द्र

(13)

सैंया बिलमि रहे परदेसवा
सपनेहु दीख सुरतिया ना।
सावन मास गरज घन बरसे
झुकी अंधेरिया ना।
बिन पिय जिय रहि रहि घबरावै
चमचम चमके बिजुरिया ना
पिया पिया रट रह्यौ पपीहा
कू कू करत कोइरिया ना
भारी उठत हूक जियरा में
सूनी देख सेजरिया ना
तुम बिन नाथ कटै नाहिं रतिया
तलफै जैसे मछरिया ना

नित उठि बाट तकूं प्रियतम के
चढ़ि चढ़ि जाऊँ अटरिया ना
सेवक कहै बिरहिनी बिलखत
अजहूंन मिली खबरिया ना
मेरो प्रीतम प्राणधार बिन
काटे कटत उमरिया ना

सेवक

(14)

हमका सावन में मेंहदी मंगा द बलमू
हाली बगीचा में जाय, लाव टटका तोराय
छोटी ननदी के हाथ पिसा द बलमू
तोहसे कइलीं तकरार पागल जियरा हमार
देवरानी से कहके रचा द बलमू
होई जिगरा मगन तोहसे कहबे सजन
आके गोड़वा के मेंहदी छोड़ा द बलमू
तोहे फुरसत हो जो कम कह लाईं जाके हम
खाली होव त टिकुली लगा द बलमू।

(15)

गोरी गोरी बहियां सबुज रंग चुनरी
पिया छोड़ी चलेनी परदेसवा।
जौं तुहु छोड़ि चलेउ परदेसवा
बताये जाउ गुनवा हो औगुनवां
जेवना बिगारेउं कि सेवा में चुकेउं
कवनि भई हमसे हो तकसिरिया
जेवना बिगारेउ न सेवा में चूकेउ
इहइ भई तोहसे हो तकसिरिया
फागुन मास धना हमारा फगुनवा
हमइ तजि गइउ हो नैहरवा।
सावन मास धना तोहरी कजरिया

तोहइ तजि चलेउं हो परदेसवा

(16)

भावे ना मोहि भवनवां बिनु मोहनवा
बादल गरजेला चमके बिचुरिया
तापर बहेला पवनवा अरे सावनवां
जैसे सावन में झहरत बुंदिया
वैसे झरेला मोर नयनवां बिनु मोहनवां
कुबजा सवत साजन बिलमावत
जाइ बसल मधुबनवां अरे सावनवां
अबले सखि मोर पिया ना आइल
बीतल मास सवनवां बिनु मोहनवां
विन्ध्य कहे जिया धड़केला सजनी
कगवा बोलत बा अंगनवां अरे सावनवां।

विन्ध्यवासिनी देवी

(17)

सावन घन गरजे रे बालमुआं
हमरे पिया परदेस में छाये
कोई नहीं बरजे रे बालमुआ।
कहत छबीले छैल पति राखो
तनिक मोरी अरजे रे बालमुआ।

भगवानदास छबीले

(18)

हरी रामा, हां रे सांवलिया
बेला फूले आधी रात चमेली भिनसारे रे हरी
कौना लगाल बेला फूल अरे कोना लगाये चमेली
बाबुल अंगना बेला फूलें ससुरार चमेली भिनसारे रे हरी
कौन ने सींचे बेला फूल अरे कौन ने सींचे चमेली
माया सींचे बेला फूल ननद चमेली भिनसारे रे हरी।

(19)

रिमझिम परै फुहारि और बुंदिया टपकी रही
झिलमिल बहै बयार पवन झलि डोल रही
डोलै नरंगिया की डार कोइलिया कूक रही
गरजै घटा घनघोर मुरइला कूजि रहे
बाबा गये परदेस बड़ी सुख दै के गए
अंगना चंदनवां कै गाछ हिंडोलना दे के गए
सैंया गये परदेस बड़ी सुख दे के गए
छतियन बजर किवरिया बियाग दुख दे के गए
जोहों बटोही तोरी बाट काहे धन नीर झरी
की तोरो नैहर दूर कि तोरी सास लड़ी
ना मेरो नैहर दूर ना मोरी सास लड़ी
हमरे बलम परदेस वहै हम सोच करै।
गरवा मैं देउं गलहार मोतिन की माल लड़ी
छोड़ो परदेसिया की आस हमारे संग चलो।
अगिया लगै गलहार मोतिन की माल लड़ी
हम तो हैं सजन तोहार देखि धन मुरझ परी।

(20)

रिमझिम बरसे लागल पनिया
चढ़ल सवनवा रे भवनवा, नाहीं आये सजनवां ना
रिमझिम रिमझिम बादर बरसे
रतिया सेजिया पर जी तरसे
जब से श्याम गये मोरे घर से
रतिया कलप कलप के हो जाला बिहनवां रे भवनवां
एक ओरि गरजे एक ओरि चमके
एक ओरि दामिनि नभ में दमके
एक ओरि गुलाब गम–गम गमके
हमका छोड़िं गये मोरे रामा केहि करनवां रे भवनवां
सब सखियां मिली कजरी गावें

हमरी बुझल आग जगावें
हमरे स्याम नहीं घर आवें
झूलब केकर संगवा सावन में झुलनवां रे भवनवां।

(21)

असों के सवनवां सैंया घरे रहौ
घरे रहौ ननदी के वीर।
आंगन तौ मोरे लेखे मधुबन, डेहरी बसें बिदेस
सेजिया लौ मोरे लेखे नागिनी पांव धरे डंस लेय
सांपन छोड़ी सांप केंचुल, नदियहु छोड़े कगार
सैंया मोरे छांड़े बारी धनिया यह दुख कहिय ना जाय
झींगुर लौ बोले बबुल तरे मुरगहु बोले पहाड़
सैंया मोरे बोलैं परदेसवा यह दुख सहिय न जाय।
सांपिन लीन्हा सांप केंचुलि नदियां लीन्ह कगार
सैंया मोर लीन्हे बारी धनिया यह सुख कहिय न जाय।

(22)

हरि–हरि कौने करनवां कान्हा जल में समाना रे हरी
गेंदवा के बहनवां सब सख के समनवां रामा
अरे रामा कालीदह में कूद पड़ल भगवाना रे हरी
नाग नाथ आये सुर सुमन झर लाये रामा
अरे रामा सुन के खबर कंस बहुत घबड़ाना रे हरी
बांसुरी बजावे मोहिनी रूप दरसावे रामा
अरे रामा ललीला अपरंपार कोई नाहिं जाना रे हरी
नागनागनी विदा कीन्ह सिर चरणन में रख दीन्हा रामा
अरे रामा पीवे जमुना जल अरू करे बखाना रे हरी
कहे निराले समझावे जो प्राणी हर गुन गावे रामा
अरे रामा राधेश्याम कह काहे अलसाना रे हरी

शायर निराले

(23)

अरे रामा उठी घटा घनघोर बदरिया कारी रे हरी
कौना दिसा से घन घहराने कहां बरस गये मेह
अगम दिसा से घन घहराने पच्छिम बरस गये मेंह
जिनके पिया परदेस बसत हैं अंसुअन भींजे गुलसारी
जिनके पिया परदेस बसत हैं छाई महलिया अंधियारी

(24)

सुगना बहुत रहे हुसियार
बिलइया बोलत बाटेना।
इधर उधर से आपन घतिया
खोजत बाटे ना।
कबौं पड़े गफलत की निरिया
जोहत बाटे ना।
रे मन मुरूख चेत जल्दी तू
सोवत बाटे ना।
कहे रूपन धर ध्यान देख
अगोरत बाटे ना।

(25)

गोड़ तोरा लागीला सैंया रे गोसइयां
अबकी सवनवां घर ही मानवहु हो रामा
अबकी सवनवां बिदेस जनि जावहु हो रामा
कतनो मनइबे धनिया कतनो बुझइबे
अबकी सवनवां मोरंग हम जाएव हो रामा
गोड़ तोरा लागीला कारी रे बदरिया
बरिसहु मूसला के धार हो रामा
पिया के जतरवा बिलमावहु हो रामा
कतनों मनइबे रे धनिया कतनों बुझइबे
छतरी ओढय हम पंथ जाएब हो रामा
अबकी सवनवां.....
गोड़ तोरा लागीला भइया छतिहरवा रे

अबकी सवनवां छतरिया न बनावहु हो रामा
पिया के जतरवा.....
कतनो मनइबे रे धनिया कतनो बुझइबे
कमरी ओढिय हम पंथ जाएब हो रामा
अबकी सवनवां.....
गोड़ तोरा लागीला भइया भेड़िहरवा
अबकी सवनवां कमरिया जनि बीनहु हो रामा
पिया के जतरवा.....
कतनो मनइबे रे धनिया कतनो बुझइबे
भींजते तितइते हम पंथ जाएव हो रामा
अबकी सवनवां.....
जौं तुहूं जाइब पिया मोरंग देसवा
हियां के कइया हम बनि जाएब हो रामा
तोहरे जतरवा बिलमाएब हो रामा
एतना वचन सुनि पिया मुसकाइले
अबकी सवनवां घर ही मनाएव हो रामा
अबी सवनवा कजरिया दूनो गाएब हो रामा।